ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
गोविंद बल्लभ पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
उधम सिंह नगर, पंतनगर, उत्तराखंड

मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक: 23.01.2024

उधम सिंह नगर(उत्तराखंड) के मौसम का पूर्वानुमान – जारी करने का दिन :2023-01-23 (अगले5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसमकारक	24/01/2024	25/01/2024	26/01/2024	27/01/2024	28/01/2024
वर्षा (मीमी)	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
अधिकतम तापमान(से.)	13.0	13.0	15.0	15.0	15.0
न्यूनतम तापमान(से.)	3.0	3.0	5.0	4.0	4.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता(%)	95	85	75	75	70
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	30	30	25	25	30
हवा की गति (किमीप्रतिघंटा)	6	6	6	6	6
पवन दिशा (डिग्री)	320	320	320	320	320
क्लाउड कवर (ओक्टा)	1	1	1	1	1

सम सारांश / चेतावनी:

पिछले सात दिनों (16 से 22 जनवरी) में 0 मिमी वर्षा हुई और अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 10.5-17.0 और 4.2-8.4oC के बीच रहा। अधिकांश दिन छेत्र में कोहरा तथा बादल छाए रहे। सुबह और शाम की सापेक्ष आर्द्रता क्रमशः 87-100% और 68-97% के बीच रही। हवा की गति मुख्य रूप से दक्षिण-दक्षिण-पश्चिम, पूर्व-दक्षिण-पूर्व, दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम-उत्तर-पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण-पश्चिम दिशा से 1.8-3.4 किमी प्रति घंटे के बीच चली। आगामी 5 दिनों के पूर्वानुमान में अधिकतम और न्यूनतम तापमान 13.0-14.0oC और 3-5oC के बीच होने की संभावना है। इस अवधि के दौरान शुष्क मौसम बने रहने की संभावना है। उत्तर-पश्चिम दिशा से हवा की गति 6 किमी प्रति घंटा रहने का अनुमान है। 23 जनवरी, 2024 को यू.एस. नगर में कुछ स्थानों पर शीत दिवस से लेकर गंभीर शीत दिवस और कुछ स्थानों पर शीतलहर की संभावना होने का ऑरेंज अलर्ट दिया गया है। घने से बहुत घने कोहरे की कुछ स्थानों पर होने की संभावना है। 24 जनवरी , 2024 को यू.एस.नगर के अलग-अलग स्थानों में ठंडे दिन, कोहरे और शीत लहर की स्थिति की संभावना के संबंध में एक येलो अलर्ट जारी किया गया है।

सामान्य सलाहकार:

मौसम पूर्वानुमान और कृषि मौसम संबंधी सलाह के बारे में एक नियमित अपडेट “मेघदूत ऐप” पर उपलब्ध है और बिजली की जानकारी प्राप्त करने के लिए “दामिनी ऐप” भी उपलब्ध है। मेघदूत और दामिनी ऐप को गूगल प्ले स्टोर (एंड्रॉइड यूज़र) और ऐप सेंटर (iOS यूज़र) से डाउनलोड किया जा सकता है। NDVI कंपोजिट क्षेत्र में मध्यम से अच्छी कृषि शक्ति को दर्शाता है। विस्तारित रेंज पूर्वानुमान प्रणाली 19-25 जनवरी तक बड़ी कमी वाली वर्षा की प्रवृत्ति को इंगित करती है। अधिकतम और न्यूनतम तापमान छेत्र में सामान्य रुझान दर्शाता है।19 और 20 को ठंडे दिनों के साथ-साथ 19, 20 और 21 को घने कोहरे की घटना के बारे में एक येलो अलर्ट दिया गया है , इसलिए खेती की गतिविधियों को तदनुसार किया जाना चाहिए।23 और 24 जनवरी को शीत लहर, ठंडे दिन और कोहरे की स्थिति की संभावना के संबंध में ऑरेंज तथा येलो जारी किया गया है तो किसान भाइयो से अनुरोध है की वह तदनुसार खेती के निर्णय ले उच्च सापेक्ष आर्द्रता और कोहरे की स्थिति रबी फसलों में बीमारियों के प्रजनन के लिए उपयुक्त है, इसलिए उचित निगरानी और छिड़काव का पालन किया जाना चाहिए।

लघु संदेश सलाहकार:

चूंकि घने कोहरे और ठंडे दिन की स्थिति की भविष्यवाणी की गई है, इसलिए किसानों को अपनी फसल की निगरानी करनी चाहिए और आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। पशुओं को अत्यधिक ठंड से बचाना चाहिए।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	अवस्था	फ़सल विशिष्ट सलाह
चना/मसूर	वानस्पतिक/ फूल आना	फसलों में नियमित रूप से निराई-गुड़ाई करनी चाहिए तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। चना/मसूर में, माहू कीट हमले में अनुशंसित प्रथाओं का पालन किया जाना चाहिए।
राइ एवं तोरिया (लाही) / पीली सरसों	परिपक्वता / फूल आना/ फली बनना	देर से बुवाई के मामले में तोरिया की कटाई परिपक्वता पर की जानी चाहिए, जबकि सरसों (राई) के मामले में फूल आने और फली बनने पर सिंचाई की जानी चाहिए। कीट और रोग के आक्रमण के लिए सरसों की नियमित निगरानी की जानी चाहिए और नियंत्रण के लिए अनुशंसित प्रथाओं का पालन किया जाना चाहिए। झुलसा रोग में मैंकोजेब 75% 2 किग्रा/हेक्टेयर की दर से 800-1000 लीटर पानी में 10 दिनों के अंतराल पर 2-3 बार छिड़काव करना चाहिए और सफेद गेरुई रोग में मेटालैक्सिल 35 डब्लू ऐस या रिडोमिल एम जेड 72, 2.5 किग्रा/हेक्टेयर की दर से 800-1000 लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अंतराल पर 2-3 बार छिड़काव करना चाहिए। तुलासिता रोग का उपचार मेटालैक्सिल 35 डब्लू ऐस या रिडोमिल एम जेड 72, 2 किग्रा/हेक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी में मिलाकर 1-2 बार छिड़काव किया जा सकता है।
गेहू	वानस्पतिक	देर से बोई गई फसल में खरपतवार निकलने की स्थिति में हाथ से निराई-गुड़ाई करनी चाहिए या आवश्यकतानुसार सिंचाई के साथ-साथ निर्धारित रसायन का प्रयोग करना चाहिए। जिंक की कमी होने पर फसल पर जिंक सल्फेट का निर्धारित मात्रा में छिड़काव करना चाहिए तथा रोगों की नियमित निगरानी करनी चाहिए। पीला रतुआ फैलने पर उचित उपाय किये जाने चाहिए।
जौ	वानस्पतिक	देर से बोई गई फसल की निराई-गुड़ाई पर निगरानी रखनी चाहिए तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए।
चारा फसलें	वानस्पतिक	फसलों की कटाई उचित समय पर करनी चाहिए तथा कटाई के तुरंत बाद सिंचाई करनी चाहिए। जई में सिंचाई के तुरंत बाद 30 किग्रा नाइट्रोजन/ हेक्टेयर डालना चाहिए।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	अवस्था	बागवानी विशिष्ट सलाह
प्याज	रोपाई/ अंकुर	प्याज की फसल की रोपाई पूरी कर ली जानी चाहिए और पौध को

		अत्यधिक ठंड से बचाने के लिए उचित उपाय किए जाने चाहिए।
सब्जीमटर	फली बनना / परिपक्वता	फसलों में नियमित रूप से निराई-गुड़ाई करनी चाहिए तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। मटर की फली या तने में सफेद रुई जैसी वृद्धि होने पर संक्रमित पौधों को हटाकर नष्ट कर देना चाहिए।
टमाटर/मिर्च	फूल/फल बनना	रोग फैलाने वाले कीटों के लिए फसलों की नियमित जांच की जानी चाहिए और अनुशंसित प्रथाओं के साथ नियंत्रित किया जाना चाहिए। टमाटर में पछेती झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए सलाह दी जाती है कि मैंकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
आलू	परिपक्वता	आलू में पछेती झुलसा रोग को नियंत्रित करने के लिए, मैनकोज़ेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर छिड़काव किया जाना चाहिए।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
गाय/ भैंस	पशुओं को ठंड से बचाने के लिए पशुओं के भोजन में तेल एवं गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। पशुओं को अजवायन और गुड़ भी खिलाएं। पशुओं को ठंड से बचाने के लिए शेड में उचित व्यवस्था करनी चाहिए। पशुओं को रिंडरपेस्ट रोग (शीतला रोग) से बचाने के लिए टीकाकरण कराना चाहिए। अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता के लिए पशु आहार में 10% की वृद्धि की जानी चाहिए।
मुर्गी	पशुचिकित्सक के अनुसार मुर्गियों को एफ़लाटोक्सिओसिस के लिए दवाई प्रशासित किया जाना चाहिए जो उनके चारे में फंगस के पनपने के कारण हो सकता है ।

अन्य (मृदा/भूमि तैयारी) विशिष्ट सलाह:

अन्य (मृदा/भूमि तैयारी)	अन्य (मृदा/भूमि तैयारी) विशिष्ट सलाह
सामान्य सलाह	इस क्षेत्र में ठंड की स्थिति और घने कोहरे की संभावना है, इसलिए युवा पौधों की सुरक्षा के लिए उचित उपाय किए जाने चाहिए। मौसम अनुकूल है; अधिकांश फसलों में रोग लगने के कारण फसलों की सुरक्षा के लिए उचित छिड़काव करना चाहिए।